पाठ 6

आपके नये स्तर

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे

कौन स्तरों को निर्धारित करता है?
आप स्तरों को कहां पा सकते हैं?
आप स्तरों के तुल्य कैसे ठहर सकते हैं?
सफलता के लिये स्तर

स्तरों को कौन निर्धारित करता है?

घर में माता-पिता स्तरों को निर्धारित करते हैं। वे बच्चों को अवगत कराते हैं कि उन्हें कैसे व्यवहार करना चाहिए।

पिता बच्चों को बतलाता है कि वे क्या कर सकते हैं अथवा वे क्या नहीं कर सकते।

बच्चे शीघ्र ही इस बात को सीख जाते हैं कि उन्हें इन स्तरों (मापदण्डों) के आधार पर रहना है। जब वे नियमों को तोड़ते हैं

तो उन का पिता उन्हें सुधारता है। यदि वे हठ करके आज्ञा पालन करने से इन्कार करते हैं, तो हो सकता है उसे उन बच्चों को दण्ड देना पड़े। वे अभी भी परिवार के सदस्य हैं परन्तु उन की अनाज्ञाकारी समस्याओं और पीड़ा उत्पन्न करती है।

हमारा स्वर्गीय पिता उन स्तरों को निर्धारित करता है कि उस के बच्चों को क्या करना चाहिए अथवा उन का क्या नहीं करना चाहिए। कभी-कभी उसे भी अपने बच्चों को दण्ड देना पड़ता है कि वे अच्छा और आज्ञाकारी बनना सीख सकें।

आप का काम

1. अच्छे नियमबद्ध घरों में कौन स्तरों (मापदण्डों) का निर्धारण करता है?

.....अ) बच्चे
.....ब) पड़ोसी
.....स) माता-पिता

2. यह आधिकार किस के पास है कहने का, कि हम मसीहियों को व्यवहार करना चाहिए?

.....अ) हमारा स्वर्गीय पिता
.....ब) सभ्यता जिस में हम रहते हैं।
.....स) हम अपने आप

उत्तर : 1. स) माता-पिता। 2. अ) हमारा स्वर्गीय पिता

आप स्तरों (मापदण्डों) को कहां पा सकते हैं?

बाईबल में परमेश्वर मसीही जीवन के लिये स्तरों का निर्धारण करता है। आप उन्हें सारी बाईबल में विशेषकर नया-नियम में पाएंगे।

ताकि इस बात में कोई सन्देह न रहे कि परमेश्वर किस तरह से चाहता था कि उसके बच्चे रहें, उसने अपने पुत्र यीशु को हमें सिखलाने और हमें मार्ग दिखलाने के लिए भेजा। वह आप का सिद्ध उदाहरण और मसीही जीवन का नमूना है।

यीशु ने मसीही जीवन के स्तरों को महान "पहाड़ी उपदेश" में वर्णन किया जो कि आप मत्ती उसके पांच, छः, और सात अध्यायों में पाते हैं।

आप का काम

3. एक अच्छे मसीही जीवन का एक नमूना आपको किसने दिया है?

.....अ) पास्तर

.....ब) यीशु मसीह

.....स) अन्य मसीही

4. "पहाड़ी उपदेश" इन अध्यायों में पाया जाता है।

.....अ) मत्ती के 5, 6 और 7 में।

.....ब) मरकुस के 5, 6 और 7 में।

.....स) यूहन्ना के 5, 6 और 7 में।

5. "पहाड़ी उपदेश" में यीशु ने

.....अ) उस विश्वास के बारे में कहा जो पहाड़ों

को हटा दे।

ब) यरुशलेम के चारों ओर जो पहाड़ है उनके बारे में कहा।

.....स) मसीही जीवन के स्तरों को सिखलाया।

उत्तर : 3. ब) यीशु मसीह 4. अ) मत्ती के 5, 6 और 7 में। 5. स) मसीही जीवन के स्तरों को सिखलाया।

सर्वप्रथम यीशु ने उन विशेष आशीषों के बारे में बतलाया जो कि परमेश्वर उनको देता है जो दीन, शान्ति चाहने वाले, और हृदय के शुद्ध हों — वे जो परमेश्वर को अपने जीवन में पहिला स्थान देते हैं और उसके नाम के निमित्त कष्ट सहने को तैयार हैं।

यीशु ने हमें अपने शत्रुओं से प्रेम और उनके लिए प्रार्थना करना सिखलाया, जिनको हमने अप्रसन्न किया है उनसे क्षमा मांगना और जो हम से दुर्व्यवहार करते हैं उनके साथ भलाई करना सिखलाया। उसके नियम दूसरों के साथ मिल कर चलने के लिये किसी के द्वारा भी दिए गए नियमों से उत्तम हैं।

आप का काम

6. पढ़िये मत्ती अध्याय 5 ।
7. (दो चुनिये) जीवन के नमूने के भाग के प्रति यीशु आपको सिखलाते हैं

.....अ) दीन बनने को

.....ब) परमेश्वर को पहिला स्थान दें और जो कुछ वह चाहता हैं करें।

.....स) जिन्होंने आपके साथ दुर्व्यवहार किया है उनसे बदला लें।

.....द) प्रत्येक बात में अपने आपको प्रसन्न करें।

8. (दो चुनिये) **मत्ती 5:13, 14** में यीशु ने सिखलाया कि परमेश्वर के बच्चे हैं

.....अ) सारी मानव जाति के लिए नमक की तरह हैं।

.....ब) कभी गल्ती नहीं करते।

.....स) सारे संसार के लिये ज्योति की तरह हैं।

.....द) सुन्दर फूलों की तरह हैं

9. (दो चुनिये) **मत्ती 5:21-30** में यीशु ने के विरुद्ध चेतावनी दी

.....अ) जुआ खेलना।

.....ब) क्रोध और बदला।

.....स) अनैतिक विचार और व्यभिचार।

.....द) दशमांश देना।

10. **मत्ती 5:43-48** में मसीह हमें आज्ञा देते हैं।

.....अ) उन्हीं से प्रेम रखें जो हमसे प्रेम रखते हैं।

.....ब) अपने शत्रुओं से प्रेम रखें।

उत्तर : 7. अ) दीन बनने को। ब) परमेश्वर को पहिला स्थान दें और जो कुछ वह चाहता हैं करें। 8. अ) सारी मानव जाति के लिए मनक की तरह हैं। स) सारे संसार के लिए ज्योति की तरह हैं। 9. ब) क्रोध और बदला। स) अनैतिक विचार और व्यभिचार। 10. ब) अपने शत्रुओं से प्रेम रखें।

यीशु ने हमें एक बुनियादी नियम दिया कि दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करें; हम इसको सुनहरी नियम कहते हैं।

> "इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें। तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।" **मत्ती 7:12.**

हमें घमण्डी, स्वार्थी, झगड़ालू और दोष लगाने वाला नहीं होना चाहिए। हमें अपने विचारों तक में गलत प्रेम कार्य या बुरी वासनाओं को स्थान नहीं देना चाहिए।

हमारी पहली रुचि परमेश्वर को प्रसन्न करने में होनी चाहिए और उसमें जो कुछ वह चाहता है कि हम करें। हम पृथ्वी के धन को कमाने का उद्देश्य बान्धे और उसी समय परमेश्वर की सेवा करें ऐसा नहीं कर सकते; परन्तु यदि हम उसको पहिला स्थान देते हैं तो वह हमारी प्रत्येक आवश्यकता को पूर्ण करेगा। इसके अतिरिक्त जो कुछ भी हम उसके लिये करते हैं उसका प्रतिफल हमें स्वर्ग में मिलेगा जो सनातन काल तक रहेगा।

आप का काम

11. पढ़िये मत्ती अध्याय 6।
12. बुनियादी नियम जो "सुनहरी नियम" कहलाता है वह है

.....अ) जो वस्तुएं लाभदायक हैं उनके लिए सोने का प्रयोग करें।

.....ब) जिस प्रकार दूसरे आप से व्यवहार करते हैं उसी प्रकार आप उनसे व्यवहार करें।

.....स) दूसरों से वैसा ही व्यवहार करें जैसा कि आप चाहते हैं वे आपके साथ करें।

13. मत्ती 6:19-21 में यीशु ने कहा हमें धन इकट्ठा करना चाहिए।

.....अ) स्वर्ग में।

.....ब) पृथ्वी पर।

उत्तर : 12. स) दूसरों से वैसा ही व्यवहार करें जैसा कि आप चाहते हैं वे आपके साथ करें।13. अ) स्वर्ग में।

आप स्तरों के तुल्य कैसे ठहर सकते हैं?

यीशु को मालूम था कि जब तक उन्हें परमेश्वर की सहायता न मिले कोई भी इन नियमों का पालन नहीं कर सकता। इसलिये उसने अपने शिष्यों को उनके स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करना सिखलाया कि वह उनकी सहायता करे। उसने उन्हें प्रार्थना का नमूना दिया जो कि मत्ती 6:9-13 में है जिसे हम प्रभु की प्रार्थना कहते हैं। प्रार्थना करते समय हम अक्सर इसे दोहराते हैं।

सबसे बढ़ कर, आपके पिता ने आपके अन्दर रह कर आपकी सहायता करने के निमित्त अपने पवित्र आत्मा को भेज दिया है। अगले अध्याय में आप इसके बारे में और अध्ययन करेंगे। उस स्तर तक जिसकी परमेश्वर आप से आशा रखता है न जी सकने के योग्य होने के कारण चिन्तित न हों; वह प्रत्येक कदम पर आप की सहायता करेगा।

आप का काम

14. मसीह ने इस उपदेश में जो हमें सिखलाता है एक प्रार्थना का नमूना दिया।

.....अ) संतों से प्रार्थना करें।

.....ब) अपने बाप दादों से प्रार्थना करें।

.....स) सीधे परमेश्वर से प्रार्थना करें।

15. प्रभु की प्रार्थना है

.....अ) एक प्रार्थना जो मसीह ने क्रूस पर कही।

.....ब) एक प्रार्थना का नमूना जो कि "पहाड़ी उपदेश" में पाया जाता है।

.....स) गतसमनी में मसीह की प्रार्थना।

16. पढ़िए मत्ती अध्याय 7।

उत्तर : 14. स) सीधे परमेश्वर से प्रार्थना करें।
15.ब) एक प्रार्थना का नमूना जो कि "पहाड़ी उपदेश" में पाया जाता है।

सफलता के लिए स्तर

यीशु हमें इस बात से अवगत कराता है कि उसकी चितौनियां एक सफल जीवन का नमूना है। हमारा जीवन एक इमारत के समान

है। हमारे विचार, शब्द और क्रियायें यह सब इस ईमारत में ईंटें हैं।

ज्यों ही हम इन सबको उसकी शिक्षा की नींव के ऊपर पंक्ति कर के लगा दें, तो हमें वह चरित्र प्राप्त होगा जो कि जीवन की किसी भी परीक्षा या तूफ़ान में स्थिर रह सकेगा।

यदि कोई भी बिना उन स्तरों का पालन किये जो यीशु ने दिये हैं और जैसा वह चाहे वैसा ही जीवन बिताने लगे तो वह उस घर की तरह जो कि बिना किसी नींव के रेत (बालू) पर बनाया गया है असफ़ल ही होगा। जब तूफ़ान आएगा तो वह स्थिर न खड़ा रह सकेगा।

यदि आप एक सफल मसीही होना चाहते हैं तो अपने जीवन को मसीह की शिक्षा के ऊपर बनाईये और उस के स्तरों का अनुसरण कीजिए। पवित्र आत्मा ऐसा करने में आप की सहायता करेगा।

आप का काम

17. वह जन मसीह की शिक्षाओं को मानता है और उन्हें मसीही जीवन की बुनियाद के रूप में प्रयोग करता है वह समान है।

.....अ) एक मनुष्य जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।

.....ब) एक मनुष्य जिसने अपना घर बालू पर बनाया।

उत्तर : 17. अ) एक मनुष्य जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।